पाठ-14

आओ, स्कूल चलें

पीपल के पेड़ के नीचे चौपाल पर पंचायत बैठी थी। पहले गाँव में स्कूल नहीं था। पंचायत की कोशिश का नतीजा है कि यहाँ अब स्कूल हो गया। गाँव के लोग बहुत खुश थे। जोश में तो स्कूल में बहुत सारे बच्चे पढ़ने आए। पर अब आध स भ। ादा बच्चे गायब रहने लगे हैं। पंचायत इसी बात को लेकर चिंतित थी। उसी पर अब चर्चा हो रही थी। उन लोगों ने मास्टरजी से सलाह लेने का निश्चय किया।

मास्टरजी पंचायत की चिंता का कारण अच्छी तरह समझते थे। वे खुद भी तो परेशान थे। उन्होंने सोचा लोगों को पहले जागरूक बनाना होगा। इस मामले में युवाशक्ति मदद कर सकती है। यही सोचकर उन्होंने अपने कुछ पुराने विद्यार्थी, जो अब नजदीक के कॉलेज में पढ़ रहे हैं, उनसे मिले। इस समस्या पर उन लोगों ने गहराई से सोचा, काफी विचार-विमर्श हुआ। अंत में उन लोगों ने लोगों में जागरूकता लाने के लिए एक नुक्कड़ नाटक खेलने का निश्चय किया।

DAILY ASSAM

रविवार का दिन था। बाजार में लोगों की बहुत भीड़ थी। युवक-युवतियों का एक दल वहाँ आ पहुँचा और थोड़ी-सी खुली जगह देखकर वहीं जम गया।

एक ने नारा लगाया- आइए, आइए, अपने अधिकारों के बारे में जानिए, इनका भरपूर लाभ उठाइए।

फिर टोली के सब लोग मिलकर घूम-घूमकर गाने लगे :

पढ़ना-लिखना है सब का अधिकार।
पढ़-लिख कर बन जाएँ सब होशियार।।

धीरे-धीरे उनके पास लोगों की भीड़ जम गई। दल के नेता ने उपस्थित जनता से गोल घेरा बनाकर बीच में कुछ खाली जगह छोड़कर खड़े होने के लिए आह्वान किया। फिर उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए कहा- "यहाँ उपस्थित देवियो और सज्जनो, भाइयो, बहनो और मित्रो, आप सबको हमारा प्रणाम। आज हम यहाँ आपके समक्ष एक नाटक खेलने आए हैं। आपलोग इसे देखें और बच्चों को पढ़ने-लिखने का जो अधिकार मिलना चाहिए, सरकार उन्हें क्या-क्या सुविधाएँ देती है, पढ़ाई-लिखाई में अब पहले से क्या-क्या परिवर्तन हो चुके हैं- इन बातों पर गौर करें। हम अपनी भूल-चूक के लिए पहले ही क्षमा याचना करते हैं और आपलोगों के सुझावों की प्रार्थना करते हैं।" इसके बाद नुक्कड़ नाटक की शुरूआत हो गई।

(एक तरफ से मोहनलाल और दूसरी तरफ से गोपाल बाबू आते हैं।)

मोहनलाल : जय राम जी की, गोपाल बाबू। कहाँ से आए?

गोपाल बाबू : जय राम जी की मोहनलाल जी। जरा बिटवा को देख आया एक बार।

मोहनलाल : बिटवा को? क्या हुआ उसे?

गोपाल बाबू : नहीं, नहीं। उसे कुछ नहीं हुआ। शहर के एक मोटर गैरेज में रखकर आया था न। काम भी सीखेगा, दो पैसा भी कमाएगा। बहुत दिन हो गए। एक बार देख आया।

मोहनलाल : तो क्या स्कूल से छुड़वा दिया उसे?

गोपाल बाबू : हाँ, क्या होगा स्कूल जाकर? कलक्टर बनना थोड़े ही है। वहीं गैरेज में काम करेगा तो एक दिन अच्छा मैकेनिक बनेगा।

मोहनलाल : पर..........

गोपाल बाबू : पर क्या? कितने ही बच्चे स्कूल छोड़कर काम कर लगे हुए हैं....... देखिए न, अब्बू मियाँ की दुकान पर वह करीम मुर्गी बेच रहा है। उधर देखिए, रासबिहारी बाबू की किराने की दुकान पर वह रमेश, फिर सरदारजी की चाय की दुकान पर बलवीर.....

मोहनलाल : (गोपाल बाबू को समझाते हुए) पर देखिए गोपाल बाबू, इन्हें अब काम करना नहीं, पढ़ाई करनी चाहिए। सबको यह बात गाँठ बाँध लेनी चाहिए कि बच्चों को काम पर नहीं, स्कूल भेजना चाहिए।

गोपाल बाबू : क्या लाभ होगा इन्हें पढ़ाकर। कौन-सा लाट साहब बनेंगे ये? घर का खर्चा चलाना मुश्किल है और इनकी पढ़ाई का खर्च भी ऊपर से लाद लें?

(सुबोध और संध्या का प्रवेश)

सुबोध : अरे गोपाल बाबू आप खर्च की चिंता क्यों करते है? बच्चों को तो बस स्कूल भेज दें, पढ़ाई का खर्च सरकार का। समझे न?

संध्या : अब तो आपलोग समझ गए होंगे कि बच्चों को काम पर नहीं लगाना चाहिए, उन्हें बस पढ़ाई के लिए स्कूल भेजना चाहिए। खर्च की चिंता नहीं। सरकार छह साल से चौदह साल की उम्र तक के सभी बच्चों की पढ़ाई का खर्च खुद उठाने का फैसला ले चुकी है। तो इसका फायदा क्यों न उठाएँ? समझ गए न?

कई लोग : हाँ, हाँ हम समझ गए। हम समझ गए।

एक आदमी : हाँ, मैं कल से ही बबुआ को फिर स्कूल भेज दूँगा।

दूसरा आदमी : हाँ, हाँ। मैं भी, हम न पढ़े तो क्या हुआ, बच्चों को तो मौका मिलना चाहिए।

सुबोध : बहुत खूब, आपलोग अपने बच्चों को तो पढ़ाइए ही और दूसरों को भी पढ़ाने की सलाह दें। तभी सब बच्चे पढ़ पाएँगे, देश की भी तरक्की होगी। *सब मिलकर गाते हैं :*

DAILY ASSAM

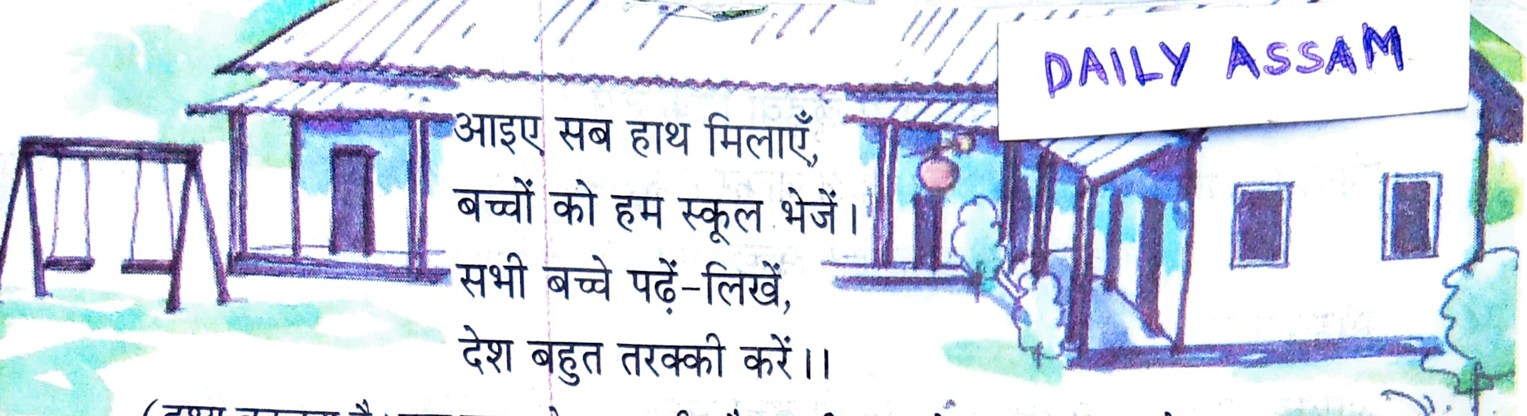

आइए सब हाथ मिलाएँ,
बच्चों को हम स्कूल भेजें।
सभी बच्चे पढ़ें-लिखें,
देश बहुत तरक्की करें।।

(दृश्य बदलता है। एक तरफ से मास्टरजी और दूसरी तरफ से सूरजमल का प्रवेश)

सूरजमल : नमस्ते मास्टरजी!

मास्टरजी : नमस्ते, नमस्ते सूरजमलजी! बहुत दिनों के बाद दर्शन हुए। कहिए आपकी बेटी की पढ़ाई कैसी चल रही है?

सूरजमल : उसे तो स्कूल से छुड़वा दिया मास्टरजी! अब जरा घर का काम-काज भी सीख ले तो काम आएगा। शादी हो जाएगी तो घर का काम-काज ही तो संभालना होगा न। कहाँ नौकरी करने जाएगी वह?

मास्टरजी : नहीं, नहीं। आप गलत सोचते हैं। सिर्फ नौकरी करने के लिए ही पढ़ाई नहीं करनी है। पढ़ाई करने से बहुत फायदे मिलते हैं, समझ बढ़ती है, सूझ-बुझ अच्छी होती है। आखिर बेटी भी तो एक दिन माँ बनेगी न? अपने बच्चे की अच्छी परवरिश के लिए, पढ़ाई-लिखाई के लिए उसे भी तो सोचना होगा न?

सूरजमल : हाँ, हाँ। यह तो अब मुझे भी लग रहा है। इस बार घर लौटकर उसे स्कूल भेजना होगा।

मास्टरजी : बहुत अच्छा। पढ़-लिखकर आपकी बेटी आपका नाम रोशन करेगी। याद रखें- पढ़ाई ही बेटी का असली गहना है।

सब मिलकर गाते हैं :

घर का काम-काज बड़े करें,
बेटी को पढ़ने स्कूल भेजें।
पढ़-लिखकर वह समझदार बनेगी,
माँ-बाप का नाम रोशन करेगी।

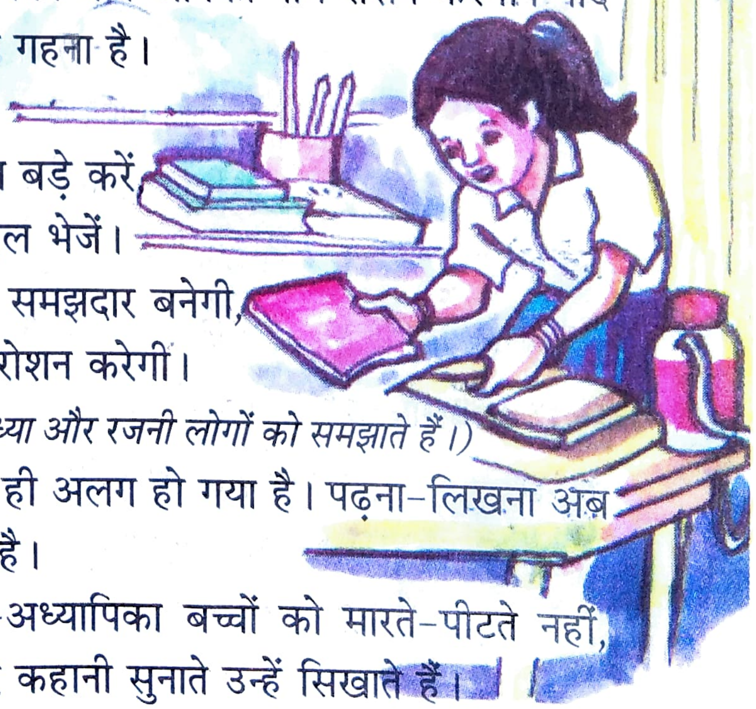

(दृश्य फिर बदलता है। मास्टरजी, सुबोध, संध्या और रजनी लोगों को समझाते हैं।)

सुबोध : आजकल तो स्कूल का माहौल ही अलग हो गया है। पढ़ना-लिखना अब मुश्किल नहीं, मजेदार हो गया है।

संध्या : आजकल स्कूल में अध्यापक-अध्यापिका बच्चों को मारते-पीटते नहीं, खेल-खेल में, नाचते-गाते और कहानी सुनाते उन्हें सिखाते हैं।

रजनी : और हाँ, अब तो इम्तहान का डर भी नहीं रहा। बच्चे जो भी सीखते हैं, उसकी जाँच लगातार होती रहती है, जो कमी होती उसे जरा समय देकर पूरा कर दिया जाता है।

सब मिलकर गाते हैं –

दीदी सबको प्यार से पढ़ाती,
गाना सिखाती और कहानी सुनाती।
खेल-खेल में होती पढ़ाई,
न कोई डर है और न पिटाई।
परीक्षा का भूत भाग गया,
किस्मत का ताला खुल गया।
पढ़ाई नहीं कहीं अधूरी रहती,
प्यार से दीदी बार-बार सिखाती।

श्यामलाल : तो अब बढ़िया है! अपने बच्चे को तो हम खूब पढ़ाएँगे।

गंगाप्रसाद : हाँ, यार। इनका भाग्य अच्छा है। इन्हें जरूर आगे बढ़ना चाहिए।

सुबोध : और देखिए, जो बच्चे देख नहीं सकते उनके लिए भी अब पढ़ना मुश्किल नहीं है। उन बच्चों की पढ़ाई के लिए 'ब्रेल लिपि' में लिखी किताबें मिलती हैं।

रजनी : जो बच्चे शारीरिक रूप से अक्षम हैं उनकी भी पढ़ाई नहीं रुकेगी। उनके आने-जाने और चलने-फिरने के लिए सरकार की तरफ से विशेष सुविधा मिलती है।

मास्टरजी : अब आपलोग ही सोचें, जब सरकार बच्चों की पढ़ाई के लिए इतनी सारी सुविधाएँ दे रही है तो आपलोग इनका फायदा क्यों न उठाएँ?

सब मिलकर गाते हैं –

बच्चों को अब स्कूल जाने से कौन रोके?
ठीक है भाई, ठीक है, चलो सब स्कूल चलें।

नाटक समाप्त हुआ। कुछ लोगों के मन पर इसका असर भी हुआ। उसे देखने के बाद कुछ लोग स्कूल से छुटे हुए अपने बच्चों को फिर से स्कूल भेजने लगे। बाकी लोगों को मास्टरजी के नेतृत्व में युवा दल के लोगों ने फिर समझाया और उनके बच्चों को भी फिर से स्कूल लाने में सफल हो गए। अब उस गाँव में सब बच्चे स्कूल जाते हैं।

– गोलोक चंद्र डेका

DAILY ASSAM

अभ्यास-माला

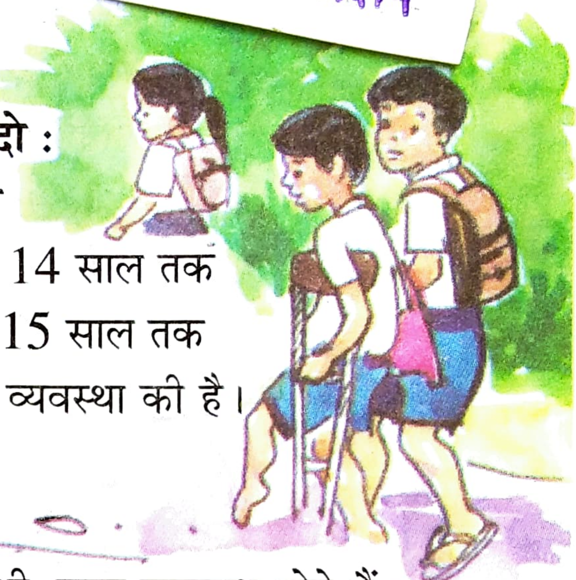

पाठ से

1. **सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो :**
सरकार ने 'शिक्षा का अधिकार' कानून के अनुसार
क) 5 साल से 16 साल तक   ख) 6 साल से 14 साल तक
ग) 6 साल से 18 साल तक   घ) 4 साल से 15 साल तक
के सभी बच्चों के लिए मुफ्त तथा अनिवार्य पढ़ाई की व्यवस्था की है।

2. **आजकल बच्चों को स्कूल में**
क) किताबें   ख) वर्दी
ग) दोपहर का खाना   घ) ऊपर लिखे गए सभी, मुफ्त उपलब्ध होते हैं।

3. **माँ-बाप तथा अभिभावकों को बच्चों को काम पर नहीं, स्कूल भेजना चाहिए, क्योंकि**
क) पढ़ने का अधिकार सबका है।   ख) काम ठीक ढंग से कर नहीं पाता।
ग) काम में पैसा कम मिलता है।   घ) काम अकेले करना पड़ता है, पर स्कूल में बहुत साथी मिलते हैं।

4. **स्कूल में बच्चे सिर्फ**
क) पढ़ते रहते हैं।   ख) खेलते रहते हैं।
ग) पढ़ाई ही नहीं, खेल-कूद, नाच-गान और बहुत कुछ करते हैं।   घ) पढ़ाई और खेल-कूद करते हैं।

5. **बच्चों को स्कूल में प्रवेश दिलाने के लिए**
क) जन्म प्रमाण-पत्र चाहिए।   ख) स्थायी निवासी प्रमाण-पत्र चाहिए।
ग) उपर्युक्त दोनों प्रमाण-पत्र चाहिए।   घ) उपर्युक्त प्रमाण-पत्र अपरिहार्य नहीं है।

पाठ के आस-पास

1. **स्कूल में पढ़ाई करने से क्या-क्या लाभ हो सकते हैं ? इस विषय पर समूह में बैठकर चर्चा करो और निष्कर्ष लिखकर कक्षा में सुनाओ।**

2. **आजकल सरकार 6 से 14 साल तक के सभी बच्चों की पढ़ाई के लिए काफी सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं। उदाहरण के लिए :**

1. किताबें मुफ्त मिलती हैं।
2. वर्दी सबको दी जाती है।
3. पढ़ाने की सुविधा के लिए चार्ट आदि दी जाती है।
4. पीने के पानी की सुव्यवस्था की जाती है।
5. शौचालय की व्यवस्था स्कूल में ही होती है।
6. खेल-कूद की व्यवस्था के लिए सामग्री तथा मैदान स्कूल में ही होते हैं।

तुमलोगों को अपने-अपने स्कूल में इनमें से जो-जो सुविधाएँ मिलती हैं उसके पास ☑ निशान लगाओ, और जो नहीं मिलती उसके पास ☒ निशान लगाओ।

3. स्कूल में तुमलोग पढ़ाई के साथ-साथ और क्या-क्या काम करते हो, उसकी एक तालिका बनाओ :

क्रमांक **किए जाने वाले काम**

1. कक्षा तथा स्कूल के परिवेश को साफ-सुथरा रखने में हाथ बँटाते हैं।
2. ....
3. ....

कक्षा में पढ़ाई के साथ-साथ कहानी, कविता, गीत आदि सुनाने के कार्य भी हो सकते हैं।

भाषा-अध्ययन

1. उदाहरण के अनुसार क्रिया रूपों से निम्नलिखित तालिका को पूर्ण करो :

क्रिया	भूतकाल	वर्तमान काल	भविष्यत् काल
आना	आया	आता	आएगा
खाना			
पढ़ना			
चलना			
खेलना			

2. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके फिर से लिखो :

क) हम खाना खाए थे।
ख) मामाजी वापस लौट आए है।
ग) वह चरम रोग से पीड़ित है।
घ) यह मेरे को मालूम नहीं।
ङ) उसके दो मामे हैं।
च) मेरी माताजी विद्वान है।

3. **निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग करके वाक्य बनाओ :**

आग बबूला होना, ईद का चाँद होना, खून-पसीना एक करना, चार चाँद लगना

योग्यता-विस्तार

1. **क्या तुमलोगों की कक्षा के कोई-कोई विद्यार्थी काम की वजह से कक्षा में नहीं आ पाते ? अगर ऐसा हो, तो उनके नाम लिखो और साथ ही कक्षा में न आ पाने का कारण भी लिखकर रखो :**

क्रमांक	नाम	कक्षा में अनुपस्थिति का कारण
1.	....	....
2.	....	....

2. **पढ़ने-लिखने के बहुत फायदे हैं। लोग इससे बहुत कुछ जरूरी बातें जान सकते हैं। जैसे-**

अगर तुम्हें या तुम्हारे आस-पास

- ➢ किसी को कोई कीड़ा काट ले,
- ➢ किसी को चोट लग जाए,
- ➢ किसी की आँख में कुछ पड़ जाए,
- ➢ किसी की नाक से खून बहने लगे,

तब क्या करना उचित है ?

कक्षा में इन पर चर्चा करो। हो सके तो किसी नर्स या डॉक्टर को कक्षा में आमंत्रित करके बातें करो।

DAILY ASSAM

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
सलाह	= परामर्श	तरक्की	= उन्नति, विकास
जागरूक	= सचेत	परवरिश	= पालन-पोषण
नजदीक	= पास, निकट	माहौल	= परिवेश
नुक्कड़ नाटक	= प्रेक्षागृह अथवा मंच के स्थान पर रास्ते के किनारे या चौराहे आदि पर किए जाने वाले नाटक का एक रूप	इम्तहान	= परीक्षा
		किस्मत	= भाग्य
		ब्रेल लिपि	= अंधे लोगों के लिए बनाई गई एक विशेष लिपि जिसमें अक्षरों को उंगलियों के स्पर्श से अनुभव करके पढ़ा जा सकता है।
बिटवा	= 'बेटा' के बोलचाल का रूप		